भारतीय पारंपरिक ज्ञान पत्रिका
खंड 25(10), अक्टूबर 2026, पृ. 947-958
DOI: 10.56042/ijtk.v25i10.29624

जम्मू और कश्मीर, भारत के पुंछ ज़िले की पहाड़ी जनजाति द्वारा सामान्यतः उपयोग किए जाने वाले जातीय-पशुचिकित्सीय पौधों का अन्वेषण

राशिदअली मुस्तफा[क], रुखसाना कौसर[क], शबीर अहमद राथेर[क], अली असगर शाह[ख] एवं एम. ए. हन्नान खान[क,*]
[क]जैव-रासायनिक एवं आणविक परजीवी विज्ञान प्रयोगशाला, [ख]निमेटोड जैव-विविधता एवं जीनोमिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला
प्राणी विज्ञान विभाग, बाबा गुलाम शाह बादशाह विश्वविद्यालय, राजौरी, जम्मू और कश्मीर, भारत
[*]ई-मेल: hannan7334@gmail.com

प्राप्त 19 जून 2026; संशोधित 25 सितंबर 2026; स्वीकृत 14 अक्टूबर 2026

जातीय-पशुचिकित्सा (Ethnoveterinary Medicine) में पशु धन की बीमारियों के उपचार के लिए औषधीय पौधों के पारंपरिक उपयोग का अध्ययन किया जाता है। यह ग्रामीण समुदायों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ आधुनिक पशुचिकित्सा सुविधाओं तक पहुँच सीमित है। इस अध्ययन में जम्मू और कश्मीर के पुंछ ज़िले के पहाड़ी समुदाय के पारंपरिक जातीय-पशुचिकित्सीय ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया गया। इसके लिए क्षेत्रीय सर्वेक्षण तथा 86 सूचनादाताओं, जिनमें किसान और पारंपरिक उपचारक शामिल थे, के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किए गए। औषधीय पौधों, उनके उपयोग किए जाने वाले भागों, तैयारी की विधियों और उपचारितपशु-रोगों से संबंधित जानकारी एकत्र की गई। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण उपयोग मूल्य (Use Value; UV) तथा सापेक्ष उद्धरण आवृत्ति (Relative Frequency of Citation; RFC) जैसे जातीय-वनस्पति संबंधी सूचकांकों के माध्यम से किया गया। अध्ययन में पशु धन की 14 प्रकार की बीमारियों के उपचार हेतु उपयोग की जाने वाली औषधीय पौधों की कुल 65 प्रजातियाँ दर्ज की गईं। पौधों के भागों में पत्तियों का सर्वाधिक उपयोग किया गया (28%), जबकि शाकीयपौधे प्रमुख जीवन-रूप के रूप में पाए गए (42.64%) / Melia azedarach का उपयोग मूल्य (UV = 0.82) और सापेक्ष उद्धरण आवृत्ति (RFC = 0.80) सर्वाधिक दर्ज की गई, जबकि Datura stramonium का उपयोग मूल्य सबसे कम (UV = 0.05) था। सूचनादाता सहमति कारक (Informant Consensus Factor; ICF) कामान 0.87 से 1.00 के बीच रहा, जो पशुधन संबंधी बीमारियों के उपचार में सूचनादाताओं के बीच उच्चस्तर की सहमति को दर्शाता है। प्रलेखित जातीय-पशुचिकित्सीय ज्ञान सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की प्रजातियों को उजागर करता है, जिनकी भविष्य में फाइटो केमिकल तथा औषधीय-क्रियात्मक जाँच की जा सकती है।

मुख्य शब्द: पहाड़ी जनजाति, जातीय-पशुचिकित्सा, स्वदेशी ज्ञान, औषधीय पौधे